

॥ गंगातीरसुखं ह्यहं ॥
सपुत्रि ~~सपुत्रि~~
वदन्ति सभा जुनजुला ॥

ASHA ARCHIVES 3404

जलजरापाउपहार

१ ता यपोताय

१ धुंता त तमका

१ दुर्वा क्षत

१ साडुडु

१ केवतिल

१ नक्ष अक्षत

१ प्रियगु

१ रूपकेसर

१ कुसमूल शुलिनागगर्भ

१ वेजा

१ सल्ल

१ वेमा

१ स्मि

१ अडुलि

१ कुकुम

१ श्रीवरा

१ कलुरि

१ पाधाल

१ लुपले

१ ओहपले

१ सुवर्ण चूर्ण

१ मानिक

१ नवरत्न

१ इतिनागगर्भ

१ उ १ कुत्र

१ कलश

१ सिंधुमुड

१ रुसकन

१ पंचखाल ५

१ नडोग्रह

१ गण गो ग्रास

१ कुमारि

१ पत कुत्र

१ नाग कुत्र

१ दधिपा

१ कुंडुड

१ उ नमः श्रीवरुणाय नमः ॥ ॥ अथः जलयस्तविधिलिख्यते
॥ ॥ तत्रादौ पीठयूजां कृत्वा ॥ ॥ कलश ॥ रुसकन ॥ सिंधुमुड
॥ पंचखाल ५ नडोग्रह ॥ गण ॥ गो ग्रास ॥ कुमारि ॥ कर्मवलि
जलकुण्ड पीतवासनलिख्य ॥ जलकुण्ड वत् अग्नि कुण्ड पीत
वासनलिख्य ॥ पंचवलि ॥ कलसवामि ॥ अग्नि कुंड संमुखि ॥ नाग
कुण्ड पीतवासनलिख्य ॥ मध्ये नाग कुंभ अष्टपद्म अष्टशृंग

लेख्य॥ अष्टदिगे अष्टपत्रं लिख्य॥ अष्टकुलनागकुंभं स्थाप्य॥ म
 धेनागकलशं स्वेत॥ पूर्वस्वेत अनंत॥ १॥ आग्नेरक्तवासुकि
 ॥ २॥ दक्षिणे पीत तक्षक॥ ३॥ नैऋत्यकृष्णक कोटक॥ ४॥ प
 श्चिमे स्वेत यम॥ ५॥ वायुवरक्त महायम॥ ६॥ उत्तल पीत
 शंखपाल॥ ७॥ शीताने कृष्णकुलिक॥ ८॥ इत्यनागकलशीत्या
 यये॥ ॥ कलशोगर्भं॥ दुग्ध स्वेतनील जव अक्षत मधु उ
 ग्धेन समभाग॥ ॥ स्वेतपुष्पमाला॥ रू पकेशर॥ प्रियंगु॥

कुशलहा॥ वेहा॥ सहल॥ विमा॥ स्यंके॥ अंगुलि॥ कुंकुम॥ श्री
 खंडा॥ कस्तुरि॥ एतेनागकलशोगर्भं॥ ॥ पाषाण॥ लंपले जोहो
 पले॥ सुवर्णवर्ण॥ मानिक॥ न होरत्न॥ एतेनागकलशोगर्भं॥
 जलकुण्डगर्भं॥ कोटिलशंगर्भं॥ मध्ये पंडकृत्त नागकृत्त॥
 अग्नेवलि॥ अर्घपात्रस्थाप्य॥ दक्षिणाल॥ न डोनागयातं॥ ए
 तेस्थाप्य॥ दंडने डोस्थाप्य॥ ॥ यजमानपुष्पभाजनं कारये
 ॥ अथादि मासु नक्षत्रा॥ यजमान अमुकप्रतिष्ठा जल्य

तनिमित्तार्थं पुष्पभाजनं समर्पयामि॥ शुद्धशानं॥ अनंतो नाग
 राजे स॥ सिद्धिरस्तु॥ यजमानस्य अमुकप्रतिष्ठा जल ज तनि
 मित्तार्थं आवा ज्यो य पुष्पभाजनं समर्पयामि॥ ॥ अथ कलश
 पूजनं॥ सूर्यार्घ्यं गुरुनमस्कृत्य॥ न्यासमृत्युं जयेन॥ जलपात्र
 अर्घ्यपात्रपूजा॥ आत्मपूजा॥ ॥ कलशपूजनं॥ कुशमुद्रिका
 या भूषणं॥ ॥ त्रिदेव॥ आधारशक्तेत्यादि॥ ध्यानं॥ शुद्धस्फ
 टिक संकाशं त्रिनेत्रं चण्डमौलिकं॥ वरदा भयहृत्तं व मुण्डमान्ता

धरं हरं॥ एवं ध्यात्वा महादेवं दृष्ट्वा कामार्थी सिद्धिदं॥ इति ध्यानपुष्पं न
 मः॥ अथोरवज्र॥ म॥ ॐ ब्रह्मणे॥ २॥ विष्णवे॥ रुद्राय॥ इन्द्राय
 ॥ सदाशिवाय॥ ॐ र्जुसः अमृतीशाय मृत्युं जया येन मः॥ पत्नये
 २॥ मार्गशिरादि द्वादशमासाय॥ अनवे॥ सम्यक्कलाय॥ शीरा
 दिसप्तसमुद्रेभ्यो॥ २॥ इंद्रादि॥ १॥ आदित्यादि॥ १॥ अश्विन्या
 दि॥ २॥ विष्णुभादि॥ २॥ मेघादि॥ २॥ मुकुर्त्ते॥ २॥ गंगादिसप्तसमु
 द्रेभ्यो॥ २॥ अश्वत्थामादि अष्टविरंजीविभ्यो॥ २॥ वशिष्ठादिसप्त

धिभो२॥ अनंतादि अष्टकुलनागेभ्यो२॥ शान्तिकला य२॥ विद्या॥ प्र
 तिष्ठा॥ निवृत्ति॥ मूलेन त्रियांजलि३॥ अघोर वलि॥ आवाहना
 दि धेनुमुद्रा॥ ॥ श्रीनमः॥ लक्ष्मीनमः॥ जापस्तोत्र॥ शुद्धशान्तं शु
 शुभं फटिकमणिमयं पद्मवंकत्रयुक्तं वाद्यं तार्थप्रयुक्तं सकल
 मुनिनंदं पंवरत्नोत्पटीनाय ग्ये जाग्यप्रसन्नं मुनिजनसकलसे
 वित्तं सर्वभावं तां देवी नौमि भक्त्या शिवशक्तियुता कुंभमूर्ति न
 मोक्त॥ अत्रगंधादि॥ दूतिकलशार्चनं॥ ॥ नवग्रहपूजनं॥

गण॥ गोत्रास॥ कोमारि॥ क्रमवलिपूजनं॥ धूपदीप॥ जाप॥
 स्तोत्र॥ श्रीसंवत्ता॥ पूर्वदक्षिणपश्चिमोर्त्तरशिवा॥ इत्यादि॥ अ
 त्रगंधादि॥ ॥ अथ नागकंडूजा॥ नवनाग॥ गुरुनमस्कार॥
 न्यास॥ ॐ हूं स अस्त्राय फट्॥ करसीधनं॥ ॐ जूं संह दयाये२॥
 ॐ जूं मोशिरसे स्वाहा॥ ॐ वशिखाये वौषट्॥ ॐ जूं रं कवचाये हूं
 ॐ जूं एनेत्रत्रयाये वषट्॥ ॐ जूं य अस्त्राय फट्॥ एवं षडंगे न्या
 स॥ ॥ जलपात्रपूजनं॥ अनंताय विद्महे वरुणाय धीमहे।

तन्नो शर्षपवो दयात् ॥ आत्मादि सर्वद्रव्यप्रोक्षणं ॥ ॥ अर्घ्यपात्र
 पूजनं ॥ षडंगेण ॥ आवाहनादि ॥ भक्तसुद्धि ॥ ॐ आधारे ॥ जं
 हृदि ॥ सः शिरः ॥ एवं लोमविलोमेन ॥ भक्तसुद्धि ॥ ॥ ॐ जं व व म
 ल व र यं व रु ण ना ग रा जा य न मः ॥ वंदनादि भक्षणं ॥ आत्मा
 नंदे व स्वरूपं ध्याना ॥ ॐ आधार शक्त्यादि अष्टपुष्टिकासन ६
 ॥ ॥ ध्यान ॥ ॐ जं व रु णं म क रा रु णं स्वेतवर्ण सुदीपितं ॥ यथा
 हि पाशसौ भाव फला सप्तविभ ॥ धितं ॥ कर्णिकोपरि दास्यंते

ॐ एमेधसमं चितं ॥ वर्षाधिपश्चरश्चैव अमृते स न मोक्षने
 ॥ इति ध्यानपुष्पं २ ॥ ॥ त्रियांजलि ३ ॥ ॐ जं वां वो वं वं व रु ण
 पाश रुष्टाय अया सप्तये म क रा रु ण य न मः ॥ ३ ॥ ॐ जं वं व
 रु ण य हं व रु ण ना ग रा जा य न मः ॥ संयुज्या ॥ तेन वलि ॥ आ
 वाहनादि ॥ धूपदीपा ॥ जापा ॥ बु ५४ ॥ ॥ स्तोत्र ॥ व रु ण य न म
 स्तुभ्यं पातालं वज्रलाघियं ॥ हिमकुंदे नु संकाशं एकवक्त्रं
 दिवा ऊर्ध्वं ॥ पाशां कुशधृता सोभां फला सप्तविभ ॥ धितं ॥

डोणमेघं समा युक्तं वर्षाशाययूरितं॥ महामकरमारुहं सर्वार्थ
 कारकृषितं॥ सर्वसंयुकरं नित्यं सर्वशान्तिनमोस्तुते॥ अत्रगंधा
 दि॥ इति वरुणनागयज्ञा॥ मध्ये॥ १॥ अथः पूर्व॥ श्वेतवर्णं अनं
 ता॥ ॐ हूं यद्वास्त्राय२॥ ॐ जूं अनंतास्त्राय२॥ ध्यानं॥ अनंतादिमं
 ह्मादेवस्वेन श्वेताञ्जलसंस्थिता॥ वरदाञ्जलकरं फनार्पयवहरी
 नकं॥ पूर्वभागे स्थितानेव शीघ्रमेघमायुतं॥ अवर्जयूजनं
 वैव अमिराजायते नमः॥ इति ध्यानं॥ त्रियांजलि३॥ ॐ जूं अं

अं अं अनंताय नमः॥ तेन वलि॥ आवाहनादि॥ क्षयदीपजाय॥
 अं॥ स्तोत्रं॥ नमोस्तुते अमिराज विप्रवंशेव तारित शुक्लशुक्ल
 वरदं, शामेयानां अवर्षत॥ पूर्वदिग्भागे मास्थाय अवर्जयूज
 नेति व॥ सर्वशान्ति करं देव अनंताय नमोस्तुते॥ अत्रगंधादि
 ॥ इति अनंतयज्ञा॥ २॥ ॥ अथ आग्नेय॥ रक्त॥ वासुकि यूजनं
 ॥ २ यद्वास्त्राय२॥ २ वासुकास्त्राय२॥ ध्यानं॥ २ आग्नेयसंस्थितं
 देवं रक्तवर्णं तु तेन सायमस्मिन् दिशु जं देव वरदो न्यलधारि

ए॥ फणा हरितपंचैव रत्नो हरणमण्डितं॥ कालमेघसमायुक्तं
 कवर्जपूज्यते नमः॥ इति ध्यान॥ त्रियाञ्जलि३॥ ॐ जुं कवर्जः वा
 वौर्व वाशुकी२॥ ३॥ वलि॥ धूपदीपजाप॥ वू॥ स्तोत्र॥ नमोस्तु
 सूर्यराजाय क्षत्रिवंसवतारित॥ रत्नांगवरोत्पलंवकालमेघ
 सवर्षते॥ आग्नेयदिग्मास्थाय कवर्जपूज्यतेति वा॥ सांतिपुष्टि
 करं नित्यं वाशुकीवनमोस्तुते॥ अत्र गंधादि॥ इति वाशुकी
 पूजनं॥ २॥ ॥ अथ दक्षिणतश्च कपीतवर्ण॥ रत्नसकासाय

२॥ ध्यान॥ रत्नसिंहेदिग्मास्त्यपन्नस्यपन्ननामकं पीतवर्णं
 सुते जांगवराञ्जकरधृतं॥ फणापंचधराकृष्णपद्ममेघसम
 न्वितं॥ वैश्यवंससमुज्जिताकर्कशं नथायते विदुः॥ इति ध्यान॥
 त्रियाञ्जलि३॥ २ ववर्जः नौतीर्त्तं तं तश्चकाय२॥ ३॥ वलि॥ आ
 वाहनादि॥ धूपदीपजाप॥ तू॥ स्तोत्र॥ रत्नमोस्तुते तश्चकायवै
 श्यवंसवतारिते॥ पीतांगवराञ्जहस्तं मेघपद्मवर्षिते॥ दक्षि
 णेदिग्मास्थाय ववर्णपूजयति वा॥ सर्वसिद्धिं कर्तव्येव ना ग

राजनमाम्यहं॥ अत्रगंधादि॥२॥ ॥ नैऋत्यकक्षवर्णिकर्कतक॥२
 कर्कतकास्नाय२॥ ध्यान॥ ककुभेदिगमाश्रत्य कर्कोटनागदे
 वता॥ कक्षवर्णमहातेजयद्रस्यं ववलोत्पलं॥ फनापंवसुपी
 तेषु घुमेयंवसमावृतं॥ रत्नालंकारसौभायधायते अहिः
 राजते॥ इति ध्यान॥ ॥ त्रियाञ्जलि३॥ २८ वर्जकां कौं कूं कूं कूं को
 टय२॥ ३॥ वलि॥ आवाहनादि॥ क्षपादि॥ ज्ञाप॥ कुं॥ स्तोत्र॥
 नमोस्तु सर्पराजाय सुदवंशसमुद्रवा कक्षं वलोत्पलधनं

विष्णुत्मा लवमेघवित॥ नैऋत्यदिगमास्थायटवर्जयजयेर्वि
 तं॥ सर्वदुरितनासाय कर्कोत्ताय नमोस्तुते॥ अत्रगंधादि॥
 इतिकर्कोटकयज्ञा॥४॥ ॥ पश्चिमेऽश्वेतपन्ननाग॥ २५ आ
 स्नाय२॥ ध्यान॥ बहूणां पश्चिमाश्रत्य यद्रस्यं यद्रवर्णिकं। वरा
 जं वकरं सौभादिव्यालं कलमंडितं॥ फनापंवहरितंगीमुखमि
 धमासह एवंधात्वाय जेदेव अहिराजाय तेनमः॥ इति॥ ॥ त्रिया
 जलि३॥ २ नववर्ज्यां पीपूं प्रपन्नाय२॥ वलि॥ क्षपदीपा॥ जा

या॥ व्रू॥ स्तोत्र॥ नमो लूयभनागायविप्रवंसवतारिता॥ स्वेतवर्णा
वरोत्पलकृतं गोमुखमेघवव्यते॥ पश्चिमेष्टुस्थिता भागे तवर्ज
पूजयश्चर॥ सर्वोपद्रवनासायनागराजनमोक्तते॥ अत्रगं
धादि॥ इति पद्मपूजनं॥ ५॥ वायुव्या॥ रक्तवर्णमहापद्म॥ २॥ म
हापद्मास्त्राय॥ ध्यान॥ मरुदिग्भागमास्थाय पद्मासनसमासि
नं॥ जवादोडिमसंकासवल्लोत्पलकल्लोक्तं॥ दिव्यरत्नसुसो
भादफनायंवाहरीतके। सहस्राभां वमेघीयं महापद्मं वधा य

ते॥ इति ध्यान॥ त्रियांजलि॥ २॥ पवर्जः मां मां मूं मूं महापद्माय॥ २॥
॥ ३॥ वलि॥ पदीया॥ जाप॥ मूं॥ स्तोत्र॥ नमो लूते महापद्मस
त्रिवंशसुशोभनं अरुणावरोत्पलधरं सहस्राभेति मेघवित्वा
युदिग्स्थितं देवं पवर्जपूज्यते श्वरः॥ वाचा सिद्धि करं नित्यं ना
गराजनमोक्तते॥ अत्रगंधादि॥ इति महापद्मपूजा॥ ६॥ ॥
उत्तरपीतवर्णसंख्याल॥ पूजनं॥ २॥ संख्यालास्त्राय॥ ध्यान
॥ उत्तरदिशि माशत्यपीतर्णमहाशक्ति। पद्मस्थितिभुजं देवं

वराञ्चकरधत्ता। फनायं वस्तु कस्तुर्वरत्नालं कालमंडितं॥ सो
ममाण्डलमेघं वसंखपारश्च ध्यायते॥ इति॥ त्रियांजलि॥ २५
वर्जः सांसांस्तु संखपाताय॥ २॥ वलि॥ नैवेद्य॥ आवाह
नादि॥ क्षपदीया॥ जाय॥ स्तु॥ स्तोत्र॥ नमोस्तु संखपाताय वैष्ण
वंसवत्तारितं। पीतवर्णं वराञ्चकमेघसर्वत्र कान्वितं॥ यवर्जं
पूज्यते देवकुवेराय नमोस्तुते॥ अत्रगंधादि॥ इति संखपाल
यजा॥ १॥ ॥ शीशाने॥ कस्तुर्वर्णनागधं कुलिक॥ २ कुलिका

स्तुताय॥ ध्यान॥ शीशः दिगस्थिता देवपद्मस्य कस्तुसोभितं। वलो
त्पलधत्तं वेति हेमालं कालमंडितं। पीतवर्णं फनायं वयुष्क
रं मेघयान्वितं॥ एवं वध्यायते देवकुलिकाय नमोस्तुते॥ इति
ध्यान॥ त्रियांजलि॥ २ शवर्जः कौंकौंकुलिशाय॥ ३॥ व
लि॥ क्षपदीया जाय॥ स्तु॥ स्तोत्र॥ नमोस्तुते कुलिशाय शुद्धं
शीयितीन्द्रव। नीलवर्णं वलोत्पलं मेघपुष्करवर्षितं॥ शीशे
वदिशि मास्थाय नानाविधिविनासनं॥ सवर्जं पूजयेन्नित्यं

नागराजनमोक्तते॥ अत्रगंधादि॥ इतिकुलिकपूजा॥ ८॥ न
त्रजस्रमंडपंगत्वा, सिंहासनीयवेश्यजलकार्यं कृत्वा॥ तामुभाए
जलं पूरये॥ तत्रजलकुण्डे, दुग्ध, श्वेतनील, यव, अक्षत, मधु, शि
ववीर्य, चुना, सुवर्ण, पंचरत्न, कुशलहा॥ एतेजलकुण्डे स्थाप्य ॥
जलकार्यं कारये॥ ॥ आवम्य॥ १॥ गुरुनमस्कार॥ न्यास॥ ॐ जं
सहृदयाय नम इत्यादि॥ षडंगन्यास॥ करंगन्यास॥ ॥ जलपा
त्रपूजा॥ अर्घ्यपात्रपूजा॥ ॥ आत्मपूजा॥ ॥ अर्घ्यपात्रोदकेन

जलकुण्डं प्रोक्षणं ॐ जं अनंतशक्तये अस्त्रायै फट्॥ प्रोक्षणं॥ १॥
ॐ जं सः अमृतीश्वराय ॥ निरिक्षणं॥ २॥ ॐ जं सः स्वतंत्रकवचा
यहं॥ ताडनं॥ ३॥ अस्त्रेन भुक्षणं॥ ४॥ कवचेन श्लेष्टनं॥ ५॥ इ
तिकुण्डशोधः॥ ॥ अथ नवस्थानकुण्डशोधये॥ ॐ जं अनंताय ॥
॥ ॐ जं वायुकी ॥ २॥ तक्षकाय ॥ २॥ कूर्कटकाय ॥ २॥ पद्माय ॥ २॥
रमहाय ॥ २॥ शंखपालाय ॥ २॥ कुलिकाय ॥ २॥ इतिकुण्डे प
र्वादि दृशानांतं शोधये॥ ॥ मूलेन विहिषयेत्॥ कवचेन रज

सा पद्मलिखित॥ मूलेण सुवर्णयम रजतपद्म कुंडोपरि स्थाप्य॥ ३
जैसः अमृतीश्वराय अमृतीश्वरी॥ पूजन॥ ७॥ इति नवकुण्डं सो
धनं॥ ॥ यजमानेन दूर्वागृहीत्वा आचार्यहस्ते दद्यात्॥ आचार्येन
आत्मविद्या शिव॥ अस्त्रमंत्रेन दूर्वाकुंडे स्थाप्य जलेन प्रोक्षणं॥ ॥
वंदनसिंहर॥ जजम॥ श्वेतपुष्प॥ ३ः सर्वतत्त्वाय नमः॥ दूर्वापूज
न॥ ॥ दाहिनावर्त्तं शंखे अस्त्रमंत्रेण अर्घ्यपात्रोदकेन प्रोक्षणं॥ शं
खे दुग्धं पूरयेत्॥ वंदनसिंहर अक्षतवाफलसंखे स्थाप्य॥ स्वदक्षे

त्रिपाटिकोपरि स्थाप्य॥ ॥ अस्त्रेण संखेपरि पुष्पगृहीत्वा कृत्वा दा
ग्निं प्रज्वाल्य॥ ॥ वतुष्वठवलि॥ भूताय विविधाकारभूविदिव्यां त
रिभगा॥ पातालतलवाशि न्यते तत्प्रांतुजलाशया॥ सर्वविघ्नकृते
भ्यः सर्वभूतेभ्यो वलिगृह्ण २ स्वाहा॥ २ अस्त्राये कृत्वा दाये हं फट् न
मो नमः॥ २ समुद्रगच्छ २ स्वाहा॥ वाय॥ ॥ अथः अमृतसंखपूजन
॥ मूलेन निलिखनं॥ अस्त्रेन भूक्षनं॥ अस्त्रेन ताडणं॥ कवचेना अ
वगुंठनं॥ इति वतुसंस्कार॥ ४॥ नेत्रमूलमंत्रेण घ्रांतेन संपूज्य

॥ आवाहनादिधेनुमुद्रां दर्शयेत् ॥ आवाज्यस्य शंखं गृहीत्वा य
जमानस्य हस्ते देया प्रणामं कारयेत् ॥ नेत्रमूलमंत्रेन जलकुण्ड
त्रिकालं भ्रामयित्वात् ॥ अमृतं यजमानस्य अमुककार्यनिमित्तार्थं
जलजग्य अमृतबीजं स्थापनं सुमत्तं ॥ मंत्रः ॥ ॐ जंसः अमृतं
वरुणा यद्रोणे मे घस्य शक्तिं सहिता यद्रुं नमः स्वाहा ॥ ऊर्ध्वं मध्ये
बीजं पत्तदिविन्तयेत् ॥ अमृतबीजं स्थापनं ॥ सेतुं एक उपरि
स्वस्ति वाक्यपठये ॥ हृदयाय नमः ॥ सेतो दया कृपया ॥ ॐ जंसः

× श्वेतील ×

हृदयाय गभीधानाय नमः ॥ पूजनं ॥ यं वे ॥ अमृतं ॥ भोयुमल ॥
आहुति ॥ स्वाहांते २ ॥ संखेन दुग्धपूर्णं ॥ गभीधानं ॥ ॥ ० ॥ ३ योति
प्रयेशिरसे युस्तिये नमः ॥ स्वाहांते हुत्वा ॥ दुग्धपूर्णं ॥ पुंशवनं ॥ २ ॥
३ इ अनादि बोधयेति शिखायेशी मन्त्राये नमः ॥ पूजनं स्वाहांते आ
हुति ॥ दुग्धपूर्णं ॥ शीमन्तो नयनं ॥ ३ ॥ ॥ ३ः स्वर्तं वक्रववाये हुं जा
ताये नमः ॥ पूजनं ॥ स्वाहांते आहुति ॥ दुग्धपूर्णं ॥ जातक्रम ॥ ४ ॥
३ः फट् अर्नत शक्तियै अस्वाये निशी क्रमाये नमः ॥ पूजनं ॥ स्वा
हांते सेवाहुति ॥ दुग्धपूर्णं ॥ निशी क्रम ॥ ५ ॥ ॥ ३ः अमृतं वरु

एणयनामकर्णयनमः॥ पूजन॥ स्वाहांते कृत्या॥ दुग्धपूर्ण॥ नामक
 रण॥ ६॥ ॥३ः सर्वगमाता हृदयाय कृत्वा प्राशनायेनमः॥ पूजन
 ॥ स्वाहांते कृत्या॥ दुग्धपूर्ण॥ फलप्राशन॥ ७॥ हृदमंत्रेन अनप्राश
 नः॥ ८॥ ॥३ः फट् अनंतशक्तिये अस्त्राय कृत्वा कर्णयनमः॥ पूज
 न॥ स्वाहांते कृत्या॥ दुग्धपूर्ण॥ कृत्वा कर्ण॥ ९॥ ॥ अस्त्रेण कर्णेनेद
 ॥ १०॥ ॥३ः अमृतवरुणाय व्रतबंधायनमः॥ पूजन॥ स्वाहांते कृ
 त्या॥ दुग्धपूर्ण॥ व्रतबंध॥ ११॥ ॥३ः फट् अनंतशक्तये व्रतमोक्षे
 नमः॥ पूजन॥ स्वाहांते कृत्या॥ दुग्धपूर्ण॥ व्रतमोक्ष॥ १२॥ ॥३ः

संमत् २६६ मिति आषाढ शुद्धि रो धकुदुवखतिनयादितव श्री विद्यानरो
 पा ध्या स्वर्गोरोहन नृपकंपतु को पा श्री कुवलया नरो पा ध्या या ज्येष्ठ पुत्रया
 त विद्या ह या कं न्यादान विद्वदिन नृपेव कतिनया स्वर्गोरोहन नृप या दुः खमव्य
 वं यात जुरो ॥

संमत् २६६ मिति वैशाख शुद्धि १ रो धकुदु मन्दिना ध्या जात्रा नरिं आसितो
 म ध्या सा लथ जुरो अ न म

८२ शा ल अश विधि

~~जयदेव~~

शुभाह गायु

~~1124/15~~

ASHA ARCHIVES

3404

अमृतवरुणाय दीक्षाय नमः ॥ पूजन ॥ स्वाहांते कृत्वा ॥ दुग्धपूर्ण ॥
दीक्षा ॥ १३ ॥ ॥ ३ः सर्वज्ञाता हृदयाय विवाहाय नमः ॥ पूजन ॥ दुग्ध
पूर्ण ॥ लाजाप्रतिष्ठा ॥ विवाहा ॥ १४ ॥ ॥ ३ः फट् अनंतेशक्तये अस्त्रा
यजात्राय नमः ॥ पूजन ॥ स्वाहांते कृत्वा ॥ दुग्धपूर्ण ॥ जात्रा ॥ १५ ॥
इति जलजग्यदशकर्मविधिः ॥ ॥ ततो वतुत्वादिस्याय न ॥ सेतो दे
यो कृष्ण ॥ पूर्व ॥ ब्रह्मने नमः ॥ पूजन ॥ आहुति ॥ दुग्धपूर्ण ॥ पूर्व
॥ ॥ संकत्राय नमः ॥ पूजन ॥ स्वाहांते कृत्वा ॥ दुग्धपूर्ण ॥ दक्षिण

॥ ॥ एवं पश्चिमे ॥ विस्मवे ॥ ॥ एवं उत्तरे अंत ॥ एवं आहुतिपूर्ण ॥
॥ ॥ ततो हव्यपात्रमुद्धि ॥ अस्त्रेण प्रोक्षणं ॥ ॥ यव ॥ अक्षत ॥ श्वेतती
ल ॥ दुग्धमिश्रितेन ॥ जंवीर ॥ अपामार्ग ॥ अश्वत्थ ॥ कुंदयुष्म ॥
जपमाला ॥ स्फटिकं वा शंखं वा ॥ ॥ अडवादयो कृष्ण ॥ यजमानस्य
गृहित्वा एवं वाक्यं पठित्वा आचार्य हस्ते दद्यात् ॥ इह जन्म कृतं मे व
शुभो यक्रमसाधनं ॥ सर्वनाग समाकृत् ॥ शुभं वारि प्रवृत्तते ॥ निवि
ष्टं इह कर्माणि राजारक्ष ॥ शुभो दयं ॥ यजमानादि सर्वेषां सांति

पुष्टिकरोम्यहं॥सिद्धिरक्तक्रियारंभेत्यादि॥॥यजमानेनआवाय्यह
स्तेदेयं॥॥ततोअनसंकल्प॥॥आहुतिंदद्यात्॥इयानुक्रमेण
॥३॥५॥७॥८॥कलहादिनवनाग॥वरुनादिआहुति॥मंत्र॥
ॐजंवाँवाँवूँवूँवरुणायैहुंस्वाहा॥आहुति॥३॥स्तोत्र॥वरुणायन
मस्तुभ्यं पातालं वज्रलाभिषं॥हिमकुण्डेऽसंकाशमेकवक्त्रदिवा
हुकं॥पाशांकुशधनासोभाफनासप्तविभ्रषितं॥सर्वसम्यक्करं
नित्यं सर्वसांतिनमोस्तुते स्वाहा॥उग्न्यपूर्ण॥मध्ये॥१॥ॐजंॐजं

ॐॐअनंतायहुंस्वाहा॥आहुति॥३॥उग्न्यपूर्ण॥स्तोत्र॥नमोस्तु
तेअहिराजाविप्रवंसेवतारित॥शुक्लशुक्लाज्वरदंश्रीमेघानतुव
र्षते॥पूर्वादिभागमास्थायअवर्गपूजयेतिव॥सर्वसांतिकरंदे
वअनंतायनमोस्तुतेस्वाहा॥उग्न्यपूर्ण॥एव॥१॥वरुण॥॥आ
ग्नेय॥ॐजंवाँवाँवूँवूँवासुकीयहुंस्वाहा॥आहुति॥स्तोत्र॥नमोस्तु
सर्पराजायसत्रिवंशिवतारित॥रक्तगवलोत्पलंवकालमेघसव
र्षते॥आग्नेयादिगमास्थायकवर्गपूजयेतिव॥सांतिपुष्टिकरंनि

त्वं वाष्पुकीवनमोक्तते ॥ स्वाहा ॥ दुग्धपूर्ण ॥ ॥ दक्षिणे ॥ ॐ जं तां तौ तं तं
 तनकाय हूं स्वाहा ॥ आहुति ॥ स्तोत्र ॥ नमोक्तते तनकाय वैस्पवंस्पवता
 रिने ॥ पीताङ्गवराजहस्तं मेघपद्मं ववर्षते ॥ दक्षिणे दिशि मास्याय व
 वर्जपूजयेति व ॥ सर्वसिद्धि करं वैवनागराजनमोक्तते ॥ स्वाहा ॥
 दुग्धपूर्ण ॥ ३ ॥ ॥ नैऋत्ये ॥ कर्कोटक ॥ ॐ जं कां कौ कं कं कर्कोटाय
 हूं स्वाहा ॥ आहुति ॥ ३ ॥ स्तोत्र ॥ नमोक्त सूर्यराजाय सुद्रवंशसमुद्र
 वाकसावरोत्पलधतं विष्णुत्मा लोचनं मेघवित् ॥ नैऋत्यदिगमास्या

याऽवर्जपूजयेति तस्वाहा ॥ दुग्धपूर्ण ॥ ४ ॥ ॥ पश्चिमे ॥ पद्मनाग
 ॥ ॐ हूं पां पौ पूं पं पद्माय हूं स्वाहा ॥ आहुति ॥ स्तोत्र ॥ नमोक्तते पद्म
 नागाय विप्रवंशे वतारिता ॥ स्वेतवर्णवरोत्पलंगो मुखमेघवर्षते
 ॥ पश्चिमे सुस्थिता भागे पवर्जपूजयेत्पर ॥ सर्वोपद्रवनासाय ना
 गराजनमोक्तते स्वाहा ॥ दुग्धपूर्ण ॥ ५ ॥ ॥ वायुये ॥ महापद्म ॥ ॐ
 जं मां मौ मूं मूं महापद्माय हूं स्वाहा ॥ आहुति ॥ स्तोत्र ॥ नमोक्तते म
 हापद्म सत्रिवंससुतो भने ॥ अरुणवरोत्परधरं सहस्राभेति मे

यवित्ना॥ वायुदिग्स्थितं देवयवा गीर्ज्यते श्वर॥ वाचासिद्धिकरं नि
 त्यं नागराजनमोक्तं ते स्वाहा॥ उगधयर्णा॥ ६॥ ॥ उत्तरशंखपाल
 रजा॥ उं जूं सां सौं हूं हूं संखपालाये हूं स्वाहा॥ आहुति॥ स्तोत्र॥
 नमोक्तं संखपालाय वैश्यवंस्य वानारितं पीतवर्णविराजं वमेघस
 र्वत्रकावितं॥ यवर्गयज्यते देवः कुवेराय नमोक्तं॥ स्वाहा॥ उ
 गधयर्णा॥ ७॥ ॥ दीशाने कुलिका॥ उं कौं कीं कूं कुलिकाय हूं स्वा
 हा॥ आहुति॥ स्तोत्र॥ नमोक्तं कुलिशाय सुदवं सोपि नो

इवानीलवर्णवरोत्तरं मेघपुष्करवर्षने॥ दीशे च दिशि मास्थाय
 नानाविधिविनासनं॥ सवर्गयज्ये नित्यं नागराजनमोक्तं ते स्वा
 हा॥ उगधयर्णा॥ ८॥ ॥ मध्ये वरुणा॥ उं जूं वां वीं वूं वूं वरुणनागरा
 जायसां गाय हूं स्वाहा॥ स्तोत्र॥ अनंतो नागराजे सदित्यादि॥ राजा
 प्रतिका॥ प्रनिस्थितो सिद्धे देसि ह्यत्यादि॥ लाजाप्रतिका॥ नवना
 गप्रतिका॥ ॥ अथः संख्याहुतिं दद्यात्॥ उं हूं वां वीं वूं वूं स्वाहा
 ॥ संख्याहुति॥ १८॥ यर्णा॥ एव यर्णाहुतिं दद्यात्॥ ॥ पश्चान्त्वा

नमः एषंगत्वादि न ज संवा ॥ अहो रात्र ज संवा ॥ वरुण जागृ
वं संनानमः एष विधि वत् स्नानादि समस्तं कारयेत् ॥ सरावं
नहः एषं कलशं कृत्वा जल जलमात्रं एवं विधेयात् ॥ तत्राग वा
पि. रूप. घणालि ॥ इत्येषु सरावं जुनया विधि ॥ कटोडं वा द
प न सहितं आमंत्रनं नमस्कृतादि ॥ दीपरोहरणा ॥ शगो
नार्थी ॥ आशीर्वाद ॥ लाजाप्रतिष्ठा ॥ सेफे. आरति ॥ यजमा
न आमंत्रेण गृहीत्वा ॥ जल कुण्डे संमुखे पीत वा सेन अथ

म. अथ शंगं लिख्य कटोल् दयन स्थाप्य ॥ ॥ अथ दश क्रम ॥
ॐ जैसः हृदयायेग भो धानाय नमः ॥ पूजन ॥ स्वाहांते दुत्वा ॥ दु
ग्धपूर्ण ॥ गर्भाधान ॥ १ ॥ ॐ जैसः योतिप्रशि रशे युष्टिका यः
नमः ॥ पूजनि ॥ आहुति ॥ दुग्धपूर्ण ॥ पुंशवनः ॥ २ ॥ ३ ॥ अ
नादि बोधाये शिखाये शीमंताय नमः ॥ पूजन ॥ आहुति ॥ दुग्ध
पूर्ण ॥ शरीवक्रनयन कल्पना ॥ शीमंतो नयनं ॥ ३ ॥ ४ ॥ स्व
तंत्र कवचाये हं जात कर्माये नमः ॥ पूजन ॥ आहुति ॥ दुग्ध

पूर्ण॥ जान क्रम॥ ४॥ ॥ अथ ध्यानं॥ ॐ जं वरुणं मकरा रुटं येन व
 र्णसुदीपितं॥ पद्माहि यशसो भाव फला सप्तवि भूषितं॥ कर्णिको
 परि प्यंतं डोण मेघ समं न्वितं॥ वर्षाधि पद्म रशौ व अम तेसन
 मोक्षते॥ इति ध्यान विधिं जये॥ ॥ ॐ जं सः अलुप्त शक्तियेनेत्र
 त्रयायनेत्रो लीलनायेनमः॥ मी मयके॥ ॥ अथ ज्ञान चतुरः
 समुद्र जलेन॥ पंचामृत॥ रत्नोदक॥ गंगोदक॥ कुशोदक॥ पं
 वग य॥ पुष्पोदक॥ फलोदक॥ एते मूल अस्त्र मंत्रेण ज्ञानं॥ श्री

खण्ड कर्पूर फुर कुंकुम वाला॥ एते पंचवर्गं ध कवच मंत्रेन दय
 नं लेययेत्॥ ॥ धूपयेत्॥ वेत॥ सिंहर॥ सगोन॥ से॥ पुष्पा॥ आशी
 र्वीद॥ सेफं॥ आरति॥ प्रणिष्ठा॥ १ः फट् अनंत शक्तये अस्त्रा
 यनिशि क्रमाय नमः॥ पूजन॥ आहुति॥ इग्ध पूर्णा॥ इति नि
 शिक्रम॥ ५॥ ॥ जात्रा॥ १ः योत्रिप्ति ये शिरसे २॥ १ः इ अनादि बोधा
 ये शिखाये २॥ १ः स्वतंत्र कवचाये हं॥ सयन वासो परि आरुघ
 ॥ इति निशिक्रम॥ ॥ अथ मंत्रेण निद्रा प्रवेतना॥ अथ यात्रोद

केन प्रोक्षणे॥ ॥ अनिद्राकरणं॥ ॥ धृतनाम्न लेनामं लिखेत्॥ मूले
ना॥ ३॥ अमृतवरुणा यनामकर्त्राय॥ पूजनं॥ आहुति॥ दुग्धपू
र्णा॥ नामं लेख्या दत्तं प्राशयति॥ नामकर्णा॥ ॥ ॥ फलप्राशना फ
ले॥ ॥ ३ः सर्वग्याता हृदयाये फलप्राशनाय॥ पूजनं॥ आहुति
॥ पूर्णा॥ फलेन फलप्राशना॥ ७॥ ॥ आज्यसंघन॥ हृदयमंत्रेण
पूज॥ आहुति दुग्धपूर्णा॥ अन्नप्राशना॥ ८॥ ॥ सुवर्णरजत॥
३ः फलं अन्नं शक्तिं अस्त्राय वृद्धाकर्णाय॥ पूजनं आ

हुति॥ एवं मंत्रेण मुंडनं॥ वृद्धाकर्ण॥ ९॥ ॥ सुवर्णरजतं फ
र्णभेद॥ ३ः हृत्स्वतंत्रकववाये हं॥ पूजनं॥ गायत्रीप्रदानं॥ स
खदीक्षा॥ व्रतबंधं॥ १०॥ ॥ अस्त्रेण पूजनं॥ आहुति॥ व्रतमोक्ष
॥ ॥ ३ः अमृतवरुणा य॥ पूजनं॥ आहुति॥ मूलमंत्रवठे॥ दी
क्षा॥ सर्वसंपूर्णा॥ ३ः सर्वज्ञाता हृदयाये विवाहाय नमः॥ पूज
नं॥ आहुति॥ पूर्णा॥ २॥ लुं दं द्राय॥ २॥ कवचं॥ सरभंडि॥ खड्गे
न॥ मत्तार्भं॥ लोहं॥ प्रातस्मिमीनत्वाय॥ ॥ सगुणदेय॥ आशी

वीद॥ आरतिदीप॥ सेकं॥ राजाप्रतिष्ठा॥ ॥ अथ मंडि दोहरये॥ इ
 तिविवाहा॥ ॥ अस्त्रेन पूजन॥ आहुति॥ पूजा॥ जात्रा॥ इति दश क्रि
 या॥ ॥ इति संपूर्ण कृत्वा॥ ॥ अथ पिंडिका स्नानं॥ २ पीठा स्नाय २॥
 २ पीठ मूर्त्तये २॥ २ पीठा य २॥ रत्न द्रव्य॥ धानु॥ औषधी॥ पिंडिम
 धेय रयेत्॥ न्यासादि षडंगेण संपूजयेत्तादि॥ आसनमंत्र॥
 आभारशक्त्यादि॥ ६॥ २ वंदम एताय अमृतासनाय नमः॥ २ क
 मलासनाय नमः॥ इत्य आसन पूजा॥ ॥ आहुति॥ ॥ ॐ जै सः

अमृतासाये वाँ वाँ वूँ वूँ वरुणागराजाय दोन मेघसहिताय शक्ति
 सहिताय हुँ वरुणागराजा स्थायन समर्त्तिस्तु॥ देव स्थापनं
 ॥ ॥ स्वस्ति वाचनं पठेत्॥ पिण्ड पूजनं आसनं देव पूजनं मूल
 मंत्रेण॥ षडंग॥ ६॥ पिण्ड काया देवता आहुति॥ पूजा॥ देवता
 वधा पंचवस्तु त्रेण वैष्टये॥ १ः आत्मतत्वाय २॥ ३ः आत्मतत्वाधिय
 तये ब्रह्मने नमः॥ पूजनं॥ आहुति॥ ३ः विद्यातत्वाय नमः॥ ३ः वि
 द्यातत्वाधियतये विष्णवे २॥ पूजन आहुति॥ नाभादिकं ठ पर्थ

टं॥ १: शिवतत्त्वाय २॥ १: शिवतत्त्वाभिषत्तये रुद्राय २॥ पूजन आ
 कुति॥ कंठादि शिरसे॥ १॥ शिलादि पादे॥ २॥ पादादि शिरशि॥ एवं
 त्रिनप्रकारेण स्वधये॥ पूजनं आ कुति॥ ॥ मूलेण शिरसि पूजनं
 ॥ आ कुति॥ ॥ पिण्ड का पूजा आ कुति॥ ॥ जीवं न्यास॥ खड्गं ग॥
 मूल॥ आ कुति॥ हृदये न जीवाकर्षणं॥ ॥ अथ नागदेवावनं॥ वलिध
 यदीप॥ जापस्तोत्र॥ आ कुति॥ परि वारादि मूलं १०८॥ मूलेन प
 ण॥ ॥ स्थिर वाक्य॥ शुभलगे॥ स्थिरो भवतु महादेवं देवानां मनु
 मावरैत्॥ यावत्तव द्रष्टुं शक्यं श्रुतावत्तं स्थिरमावरै॥ निर्विघ्नं च

जनेनाथ सदा श्रद्धा पनं कुरु॥ नवमारि न दुर्भिक्षं न वीरान् च विप्रवि
 । न राक्षसं भयं न तस्य परवक्रं न यापहं॥ इह त्रभोग भुंजीत परत्रेव य
 रंगतिं॥ यावत्तव द्रष्टुं शक्यं श्रुतावत्तं भवते नि
 त्यं स्थातव्यं नु शिवाय॥ स्थिरो भव ३ यजमान आचार्य कलामि॥
 इत्येन स्थिरं कृत्वा॥ प्रति स्थितो सिद्धे देवेशि वरुण जागरे श्वर॥ प्रति
 स्थितो सियत्पुण्यं असंख्य फल मुत्तमं॥ आयुस्संख्य॥ सर्वपाप विनि
 मुक्तं मायुराशेय वर्द्धनं॥ यत्पुण्यं सर्वमीश्वर्यं भातय मम नीश्व
 रं॥ ॥ मूलेन आ कुति॥ १०८॥ स्तोत्र॥ संखेन प्रतिष्ठा कुति॥ ला

जाभिषेक॥२॥प्रतिस्थितोति॥वाक्॥सगोनाभि॥आशिर्वीद॥सेफं॥मले
 ण॥इतिनागप्रतिष्ठा॥॥देशायानना॥बहिद्वारांगना॥२॥स्वाहा॥
 भुवस्वाहा॥२॥स्वस्वाहा॥२॥भुवस्वस्वाहा॥३॥भुभुस्वसांतिरक्तस्वाहा
 ॥सांतिक॥हव्ययात्रेषुशिरिषिगृहीत्वाएवंदद्यात्॥॥३॥पुंपुष्टि
 रक्तस्वाहा॥पुष्टिक॥शिरिषि एकं गृहीत्वाप्रक्षिप्य॥देशवलि॥त्रि
 देवयोमि॥इंइदि१०॥ब्रह्मादि८॥अशितोंगादि८॥हेतुकादि१०॥देश
 याअनुक्रमेणमालुकं त्रियांजलि३॥वलिंदद्यात्॥ववुशतियोमि
 वलि॥महावलि॥त्वाकमहावलि॥आहुतिं॥दुग्धपूर्ण॥पूर्व

न्या

दक्षिणयश्चिमोर्त्तरशिवाद्यादि॥जवन्मादि॥यव॥धान्य॥लज्जा॥स
 मीध॥जंवीर॥सीधज्जा॥बध्वाज्जा॥कोलसे॥रूपकेशर॥यमकेश
 र॥सुमुख॥शतपुष्प॥श्वेततीर॥वाक्फला॥अक्षत॥॥आचार्ययज्ञ
 ॥अनसंकल्प॥वर्तिकायागणयात्सेत्वंपु५४॥दक्षिणा॥॥दे
 शवलिविशर्जन॥॥संखेदुग्धवीर्य॥सुवर्ण॥कुशलहा॥नवरत्न॥
 कुंदपुष्प॥अक्षत॥श्वेततील॥अंडया॥एतसंखेगर्भं कृत्वा पूर्णं क
 रयेत्॥पूर्ण॥यज्ञादयो एकवैलां कथयेत्पूर्ण॥अष्टदिगंशं म
 ध्यसहितं न कुगे॥॥वापिकूप॥प्रनालिका॥मध्यमात्रं नागकल

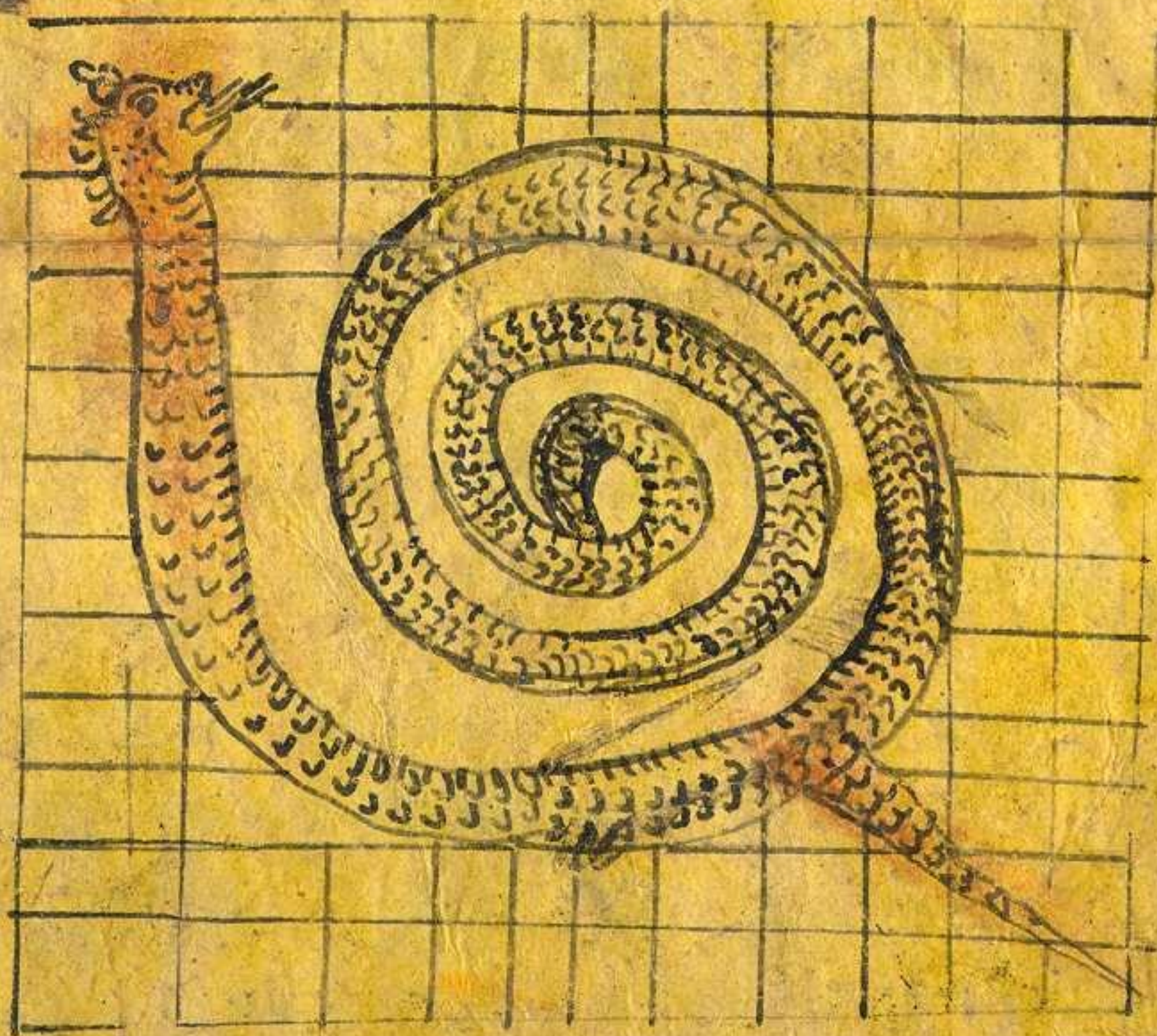
॥ सहितं पूजयेत् ॥ पूजां कृत्वा ॥ यजमानस्य पुष्कराणि प्रति
ष्ठा जलस्य ग्यसं पूजां सुमुर्तिमस्तु ॥ ॐ जंसः अमृती शाय वों वों वें वें वरु
णनागरा जायद्रोण मेघसहिताय हुं सुपूजां स्तुत्वा हां यौ घट् ॥ स्तोत्र
॥ वरुणाय नमस्तुभ्यं पातालं च जलाधियं ॥ हिमकुंदे दुसंकासं मकर
वक्त्रं दिवा कुकं ॥ पाशां कुशधना शोभा फणा सप्रविभ्रषितं ॥ द्रोण
मेघसमा युक्तं वर्षधारा प्रधूरितं ॥ महाकमलमारुढं सर्वलं काल
भ्रषितं ॥ सर्वसंयत्करं नित्यं सर्वशान्तिनमोस्तुते स्वाहा ॥ शंख अ
धोमुखं कं कृत्वा ॥ आसंसा ॥ इंद्राया लोकपाला ॥ संतसंतनिरं

नरं सुकृतिनो ॥ अतानाज्ञानतो वा ॥ दोषेन राशेत्यादि ॥ ॐ जंसः व
रुणानमस्तुभ्यं पातालं च निवासिनं ॥ नागराजनमस्तुभ्यं वरुणं मक
रासनं ॥ नमोस्तुते अनंताय वासुकीवनमोस्तुते ॥ तक्षकाय नमस्तु
भ्यं कर्कोटाय नमो नमः ॥ यजिते यमनागे भ्यो महायमनमा म्य
हं ॥ नमस्ते शंखपालाय कुलिशाय नमोस्तुते ॥ मणि कुण्डाय उड्ड
ष्टिसेवनाग अधीयति ॥ एवं दशदिशो नागमधो वरुणराज्ये ते ॥
रुगते सर्वराज्ये भ्यो यदृष्यारसप्रिये ॥ स्वेताण्ड लङ्घिवा नित्यं स
द्वीपुष्य पूजयेत् ॥ यं यं पूजितं भक्तिं यजं न नत्प कृत्य प्रदं

॥ नागरप्रदानं वदने श्रयसावके। हृदि शुद्धपद्मे यस्तु अपमृत्युं
 विनश्यति॥ संवत्सरकृतं पापं खण्डितं तव वाश्रुकी॥ देवतानां प्रिया
 भर्त्ता शोभितं रुद्रकण्ठके॥ पवित्रं वोपवीतांगे आहारो विविध
 त्फलं॥ सर्वपापविनाशाय मानंदं इति निश्चितं॥ नागस्तोत्रं य
 द्यैस्तु रुद्रलोकं स गच्छति॥ ॥ यथावानप्रहाराणां इत्यादि॥ ॥ आशी
 र्वदि॥ सेवाकुति॥ ॥ सीरकुण्डे पुराणं॥ ॥ ताम्रुलं निवेदनं॥ कलशः
 विशर्जनं॥ ॥ यजमानभिक्षेकं॥ निर्मलनादि॥ शोभायुष्मि॥ आ
 शीर्वदि॥ उपदोहणाय देयं आचार्यस्तं॥ न वनागविसर्जनं॥

जलकुण्डविशर्जनं सूर्यसाक्षि॥ न वनागकलशथायथायसंद
 देन॥ तद्रागं वा कुर्यां वा मध्ये संजलमध्ये प्रतिष्ठायाः द्रव्यं जल
 मध्ये स्थाप्य॥ पुष्करि मध्ये नागकाष्ठं स्थाप्य॥ पुष्पं वा द्रव्यं नाग
 काष्ठे स्थाप्य॥ नागकाष्ठं शिवं पुष्करनिशक्तिं प्रतिष्ठाकारे एवं प्र
 भाणं॥ अष्टकलशनागार्घ्यं अष्टदिगं स्थाप्य॥ यत्कलसं स्थाप्य
 न नाग एकं पुष्करनिवासे स्थाप्य॥ इत्यसमस्तं कृत्वा॥ ॥ कौमारि
 यजा॥ मर्जितं हिंसा माला॥ समय॥ दक्षिण॥ एकानेक॥ अं

वेपुर्ध्वं॥ विसर्जनं॥ आयसंदद्यात्॥ समयभोज्यं॥ कलंकान्तं॥ ॥
 इति जलजराविधिः॥ ॥ चतुर्थदिने जलं नगदित्वात्॥ ॥ व
 तुर्थदिनेषूजां कृत्वात् जलं गृहीत्वा देवान् जलं निवेदयेत्
 ॥ ॥ शिवनारायणं पंचामृतादीन् पूजयेत् जलं निवेदयेत्॥
 प्रोहितादिं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ ॥ शुभं भवतु॥ ॥ ॥



तमो नमः कारणवामनाय नारायणायामितविक्रमस्यैव